सांईबाबा की प्रेरणा

श्रद्धा सबुरी

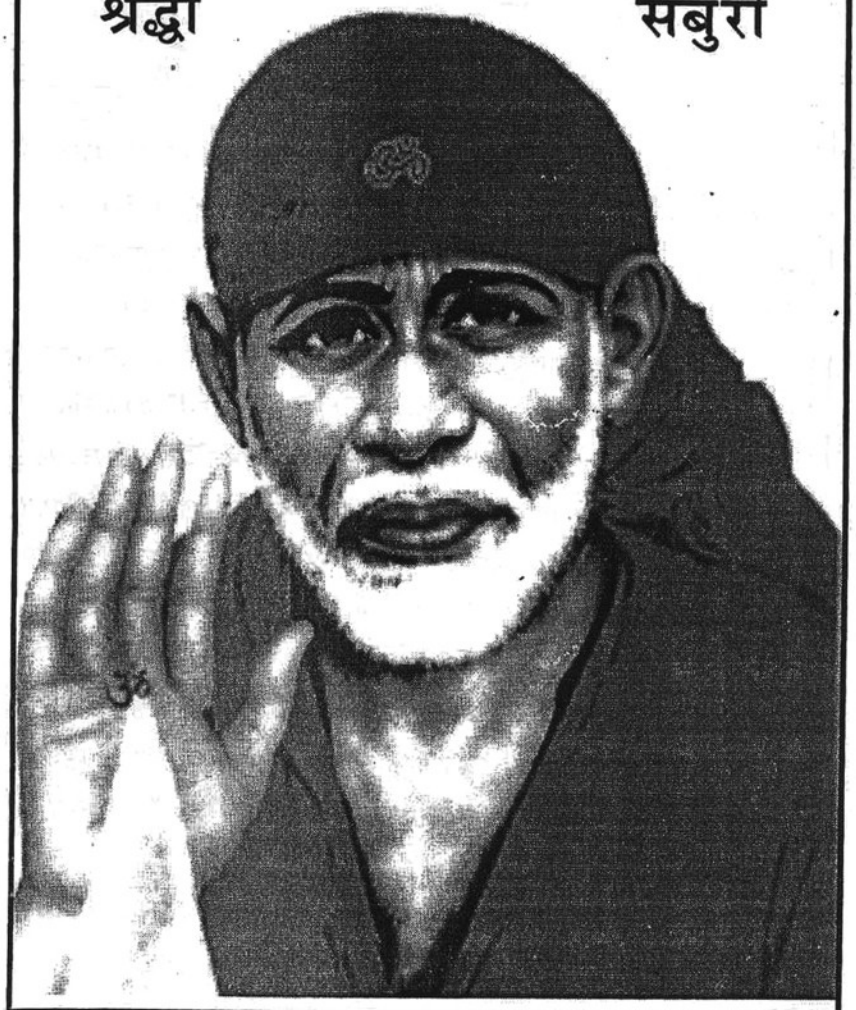

लेखक

शांतिलाल गोपालदास पंचाल

ऐसे हुई
प्रेरणा

एक रोज मैं साईंबाबा के सामने बैठा था तथा अपने जीवन में घटी घटनाओं का स्मरण कर रहा था कि मुझे बाबा ने प्रेरणा दी कि मुझे कुछ लेखन कार्य करना चाहिए । यह विचार धीरे - धीरे मूर्त रूप लेने लगा और बाबा मुझसे प्रेरणाएं लिखवाते गये ।

प्रारंभ में ५ प्रेरणांए लिखीं फिर इनकी संख्या ११ तक पहुंच गई । इन प्रेरणाओं को मैं नि:शुल्क वितरित करता रहा जिससे इसका देश-विदेश में व्यापक स्तर पर प्रचार होता गया । प्रेरणा पढ़कर लाभ प्राप्त करनेवालों ने मुझे बड़ी संख्या में पत्र लिखे, टेलिफोन पर एवं व्यक्तिगत रूप से भी बहुत से लोगों ने मुझे धन्यवाद दिया तथा आभार व्यक्त किया । इससे मेरा मनोबल बढ़ा और मन में यह विचार प्रबल हो गया कि इन प्रेरणाओं को एक पुस्तक रूप दिया जाए ।

अनंत कोटि ब्रम्हांड नायक राजाधिराज योगिराज परब्रह्म श्री सच्चिदानंद सद्गुरू साईंनाथ महाराज की परम कृपा से आज पुस्तक आपके शुभ हाथों में है ।

पुस्तक का शीर्षक मेरी धर्म पत्नी श्रीमती ललिताबेन ने दिया । प्रेरणाओं का भाषा रूपांतरण करनेवाले विद्वत जनों एवं प्रयुक्त चित्रों के चित्रकारों का मैं आभारी हूं ।

प्रेरणाएं पढ़ने से आपको क्या अनुभव एवं लाभ हुए कृपया उससे मुझे अवगत करायें । साईबाबा सबका कल्याण करें इन्हीं भावनाओं के साथ...

- शांतिलाल गोपालदास पंचाल

भाग - १

मेरे मार्ग पर पैर रखकर तो देख,
तेरे सब मार्ग न खोल दूँ तो कहना ।।
तू मेरे लिए खर्च करके तो देख,
कुबेर के भंडार न खोल दूँ को कहना ।।
मेरे लिए कड़वे वचन सुनकर तो देख,
कृपा न बरसे तो कहना ।।
मेरी तरफ आ के तो देख,
तेरा ध्यान न रखूँ तो कहना ।
मेरी बात लोगों से करके तो देख,
तुझे मूल्यवान न बना दूँ तो कहना ।।
मेरे चरित्रों का मनन करके तो देख,
ज्ञान के मोती तुझमें न भर दूँ तो कहना ।।
मुझे अपना मददगार बना के तो देख,
तुझे सबकी गुलामी से न छुड़ा दूँ तो कहना ।।
मेरे लिए आँसू बहा के तो देख,
तुझे सबकी गुलामी से न छुड़ा दूँ तो कहना ।।
मेरे लिए कुछ बन के तो देख,
तुझे कीमती न बना दूँ तो कहना ।।
मेरे मार्ग पर निकल के तो देख,
तुझे मशहूर न करा दूँ तो कहना ।।
मेरा कीर्तन करके तो देख,
जगत का विस्मरण न करा दूँ तो कहना ।।
तू मेरा बन के तो देख,
हर एक को तेरा न बना दूँ तो कहना ।।

भाग - २

तू मुझे मंदिर मस्जिद और गुरूद्वारे में याद करके तो देख,
तुझे हर जगह पे मेरा दर्शन न करा दूँ तो कहना ।।
तू मुझे हर घड़ी याद करके तो देख,
तेरा हर घड़ी रक्षक न बनूँ तो कहना ।।
तू मेरे लिए कष्ट उठाके तो देख,
तेरे जीवन में आने वाले हर कष्ट को दूर न कर दूँ तो कहना ।।
तू मेरे धाम में नंगे पैर चलके तो देख,
तेरे पैरों से हुए हर पाप को नष्ट न कर दूँ तो कहना ।।
तू मुझे तेरे हाथ का बनाया हुआ प्रसाद खिलाके तो देख,
तेरे घर में अन्न का भंडार न भर दूँ तो कहना ।।
तू मेरा ग्रंथ पवित्रता से पढ़के तो देख,
तुझे विजयी न कर दूँ तो कहना ।।
तू मेरे भक्त में मेरा दर्शन करके तो देख,
तुझे तेजस्वी न बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरे नाम की एक माला जपके तो देख,
तुझे संतों का दर्शन न करा दूँ तो कहना ।।
तू मेरे में मन लगा के तो देख,
तुझे मनमोहक न बना दूँ तो कहना ।।
तु मुझे ॐ सांईराम ॐ साईराम पुकार के तो देख,
तेरे मन मंदिर में तेरी पुकार सुनता ही रहूँगा ।।
तू मेरे लिए मौन रखकर तो देख,
तेरे मन को शांत न कर दूँ तो कहना ।।
तू मेरे सामने बैठके तो देख,
हर पल तेरे सामने न रहूँ तो कहना ।।
तूने मेरी प्रेरणा को तेरे तन मन धन से स्वीकार करके लिखी,
मेरी प्रेरणा लिखने वाले शांतिलाल, तेरा जीवन धन्य धन्य न कर दूं तो कहना ।।

भाग - ३

तू मेरे पास आकर को देख,
तेरे सर्व दु:ख दूर न कर दूँ तो कहना ।।
तू मेरे धाम में रहकर तो देख,
तेरे घर को तीर्थ न कर दूँ तो कहना ।।
तू मेरा प्रसाद ग्रहण करके तो देख,
तेरे विचार पवित्र न कर दूँ तो कहना ।।
तू मेरी उपासना करके तो देख,
तुझे कर्मयोगी न बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरी आरती गाकर तो देख,
तेरी जुबां पर सरस्वती विराजमान न कर दूँ तो कहना ।।
तू मेरे कदम पे चलकर तो देख,
मै तेरे आगे न चलूँ तो कहना ।।
तू मेरे नाम से दुखियों की सेवा करके तो देख,
तेरे मन में सुख-शांति न भर दूँ तो कहना ।।
तू मुझे अपने घर में बिठा के तो देख,
तेरा घर स्वर्ग न बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरी विभूति का तिलक करके तो देख,
तेरा मुखारविंद दिव्य न कर दूँ तो कहना ।।
तू मेरे पे फूलों की वर्षा करके तो देख,
तेरे ऊपर सुविचारों की वर्षा न कर दूँ तो कहना ।।
तू मुझे चरण स्पर्श करके तो देख,
तुझे हर किसी का प्रिय न बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरा चरण स्पर्श करके तो देख,
तेरे अंग-अंग में न स्पर्श करू तो कहना ।।
तू मुझे चंदन का तिलक करके तो देख,
मै तेरे भाग्य का उदय न कर दूँ तो कहना ।।

भाग - ४

तू मेरे आसन रूपी पत्थर पे तेरा मस्तक नमन करके तो देख,
मैं तुझे कोटि-कोटि पापों से न छुड़वा दूँ तो कहना ।।
तू सांई भक्त बनके तो देख,
मैं तुझे भक्ति रूपी रंग में न रंगूँ तो कहना ।।
तू मेरी छवि तेरे शरीर पर धारण करके तो देख,
मैं तेरे रोम रोम में न समाऊँ तो कहना ।।
तू मेरे नाम का कोई ग्रंथ लिखकर तो देख,
मैं तेरे ग्रंथ को मशहूर न कर दूँ तो कहना ।।
तू मेरी शिरडी में आकर मेरा गुणगान गा कर तो देख,
मैं तुझे अति गुणवान न बनादूँ तो कहना ।।
तू खड़े पैरों से घंटों तक मेरा दर्शन करके तो देख,
मैं तुझे हर तीर्थों की यात्रा न करा दूँ तो कहना ।।
तू मेरी पादुका को नमन करके तो देख,
मै तुझे मेरा सच्चा भक्त न बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरी ज्योत जलाकर तो देख,
मैं तेरे जीवन की ज्योत न सँवारुँ तो कहना ।।
तू मेरे दरबार में आकर मेरी उपासना करके तो देख
मैं तुझे हर भक्तों की उपासना न करा दूँ तो कहना ।।
तेरे घर में बिठा के मेरी उपासना करके तो देख,
मैं तेरी हर उपासना में मेरा दर्शन न करा दूं तो कहना ।
मेरी शिरडी में आने का संकल्प करके तो देख,
मैं तुझे बार-बार शिरडी न बुलाऊँ तो कहना ।।
तू मुझे सच्ची भक्ति से सच्चे प्यार से याद करके तो देख,
मैं तेरे पे अति प्यार की वृष्टि न करूँ तो कहना ।।
तू तेरे में मेरा अंश समझ के तो देख,
मैं तुझे मेरी पहचान न करा दूँ तो कहना ।।

भाग - ५

तू तेरी जीवन नौका मुझे अर्पण करके तो देख,
मैं तेरी जीवन नौका को भवसागर पार न करा दूं तो कहना ।।
तू मेरी अखंड धूनी का धुआँ तेरी श्वासोंश्वास में लेकर तो देख,
मैं तेरे शरीर को निरोगी न कर दूँ तो कहना ।।
तू मेरी द्वारकामाई की समाधि की झाँकी करके तो देख,
मैं तुझे मेरी झाँकी न करा दूँ तो कहना ।।
तू मेरे स्नान किये हुए गंगाजल का आचमन करके तो देख,
मैं तेरी आत्मा को परम शांति न दूँ को कहना ।।
तेरे जीवन का हर कोई व्यवहार मुझे सौंपकर तो देख,
मैं तुझे हर व्यवहार में साथ न दूँ तो कहना ।।
तू मेरे में मन लगाके मेरा विश्वासु बनके तो देख,
मैं तुझे हर किसी का विश्वासु न बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरे गुरूवार के भंडारे का प्रसाद ग्रहण करके तो देख,
मैं हर गुरूवार के प्रसाद में अमी न भर दूँ तो कहना ।।
तू मेरा यादगार बनके तो देख,
मैं तुझे हर किसी का यादगार न बना दूँ तो कहना ।।
तू मुझे तेरी फरियाद सुनाकर तो देख,
मैं तेरी हर फरियाद का मार्ग न दिखा दूँ तो कहना ।।
तू तेरी निर्मल आँखों से मेरा दर्शन करके तो देख,
मैं तुझे हर धर्म का अनुरागी न बना दूँ तो कहना ।।
तू मुझे एक धूप सली में मेरा दर्शन करके तो देख
मैं हर धुएं में तुझे मेरा अस्तित्व याद न करा दूँ तो कहना ।।
तू मुझे हर सांई मंदिर में मदद रूप बन के तो देख,
मैं तेरा हर घड़ी मददगार न बनूँ तो कहना
तू मेरे सामने तेरे दो हाथ जोड़ के प्रणाम करके तो देख,
मैं मेरे हाथों से तेरे पर आनेवाले हर विघ्नों को रोक न दूँ तो कहना ।।

भाग - ६

तू मेरी पदयात्रा में मेरे साथ-साथ चल कर तो देख
मैं तुझे मेरी हर पदयात्रा में न बुलाऊँ तो कहना ।।
तू मेरे पदयात्रियों की सेवा करके तो देख,
मैं तेरी हर सेवा में साथ-साथ न रहूँ तो कहना ।।
तू शिरडी तक मेरी पदयात्रा करके तो देख,
मैं तुझे पृथ्वी के हर तीर्थ की यात्रा न कराउँ तो कहना ।।
तू मेरी पदयात्रा एक बार करके तो देख,
मैं तेरी इकहत्तर पीढ़ी न तारूं तो कहना ।।
तू मेरी नौ दिन की पदयात्रा करके तो देख,
मैं हर पल तेरी श्वासोश्वास में न समाऊं तो कहना ।।
तू मेरी समाधि पर चादर अर्पण करके तो देख,
मैं तेरी चादर के हर धागे का हिसाब न चुका दूँ तो कहना ।।
तू मेरी पदयात्रा की पालकी का बोझ उठाकर तो देख,
मैं उस बोझ को फूल समान न कर दूँ तो कहना ।।
तू मेरी पदयात्रा में मेरी पावन पादुकाओं का श्रीसांई, श्रीसांई स्मरण करके तो देख,
मैं तेरे पैंरों को पूजनीय न बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरा हर काम निस्वार्थ भाव से करके तो देख,
मैं तेरे हाथों से हर शुभ कार्य न कराऊं तो कहना ।।
तू मेरी समाधि पर अपना मस्तक नमन करके तो देख,
मैं तुझे मेरा साक्षात्कार न करा दूँ तो कहना ।।
तू मेरी समाधि के आगे मुझसे कुछ माँगकर तो देख,
मैं तुझे भाग्यवान न बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरे सामने अपनी दो बाँहें फैलाकर मांगकर तो देख,
मैं तेरी खाली झोली न भर दूँ तो कहना ।।
तू मुझे देख नहीं सकता, मगर अपनी आँखों से मेरे सामने अश्रु बहाकर तो देख,
मैं तेरी आंखों में दिव्य रोशनी न भर दूँ तो कहना ।।

भाग - ७

तू मेरी शिर्डी में हजारों भक्तों के साथ नि:संकोच मेरा प्रसाद खाकर तो देख,
मैं तुझे हर कष्ट से मुक्त न कर दूँ तो कहना ।।
तू मेरी काकड़ आरती लेकर तो देख,
मैं मेरी काकड आरती में मेरा करूणामय दर्शन न दूँ तो कहना ।।
तू मेरे सामने एक श्रीफल का भोग धरकर तो देख,
मैं तुझे भोगी से योगी न बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरी आरती में योग्य समय देकर तो देख,
मैं तेरा हर समय निर्विघ्न न बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरे मंदिर की ध्वजा का दर्शन करके तो देख,
मैं तुझे मेरी दिव्य आत्मा का दर्शन न करा दूँ तो कहना ।।
तू मेरी शिर्डी की पावन रज अपने मस्तक पर चढ़ाकर तो देख,
मैं तेरा हर कार्य करूणामय न बना दूं तो कहना
तू मेरी आरती का घंटानाद सुनकर तो देख,
मैं उसकी हर गूँज में सांईसांई न सुना दूं तो कहना ।
तू मुझे चाँदी के आसान पर बिठाकर तो देख,
मैं तुझे सुखों की छत्रछाया में न रखूँ तो कहना ।।
तू मेरी प्रेरणा को मेरे मंदिर में सुरक्षित रखकर तो देख,
मैं तुझे सुरक्षित न रखूं तो कहना ।।
तू मेरी हर प्रेरणा को सुबह-शाम पढ़कर तो देख,
मैं तुझे प्रेरणा लेखक न बना दूँ तो कहना ।।
तू इस प्रेरणा को मेरी प्रेरणा समझकर तो देख,
मैं तुझे प्रेरक पुरूष न बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरी प्रेरणा शब्द का मनन करके तो देख,
मैं तुझे मेरी प्रार्थना न करा दूँ तो कहना ।।
तू मेरे पवित्र धाम में पवित्र रहकर तो देख,
मैं तुझे गंगा समान पवित्र न कर दूँ तो कहना ।।

भाग - ८

तू मेरे श्रद्धा सबूरी मंत्रों का उच्चारण करके तो देख,
मैं तेरी वाणी में विवेक न ला दूँ तो कहना ।।
तू मेरा काम करके तो देख,
मैं तेरे काम में ध्यान न रखूं तो कहना ।।
तू मुझे राम समझकर तो देख,
मैं तुझे मर्यादित ना बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरे आभूषणों से मुझे सजाकर तो देख,
मैं तेरी सुंदरता को अखंड ना रखूं तो कहना ।।
तू मुझे अपना रक्षक समझकर तो देख,
मैं तेरी रक्षा ना करूं तो कहना ।
तू मेरे आगे राम धुन गाकर तो देख,
मैं तुझे धर्म का अर्थ न समझा दूँ तो कहना ।।
तू मुझे राम-रहीम समझकर तो देख,
मैं तुझे धर्म का अर्थ न समझा दूँ तो कहना ।।
तू मुझे दुनिया का पालनहार समझकर तो देख,
मैं तेरा पालनहार न बनूँ तो कहना ।
तू मुझे अलख निरंजन समझकर तो देख,
मैं तुझे योग्य भिक्षा ना दूं तो कहना ।।
तू मुझे शिरडी का संत समझकर तो देख,
मैं तुझे मेरा शरणार्थी ना समझूँ तो कहना ।।
तू मेरी आंखो में आँखें मिलकर तो देख,
मैं तुझे सांई दर्शन न करा दूँ तो कहना ।।
तू सदा मेरी भक्ति करके दो देख,
मैं तुझे मोक्ष का द्वारा ना दिखला दूँ तो कहना ।।
तू मेरे धाम को भक्तिधाम समझकर तो देख,
मैं तुझे मेरा भक्तदास ना बना दूँ तो कहना ।।

भाग - ९

तू मेरे चरणों का अभिषेक करके तो देख,
तुझे मेरे चरणों में त्रिवेणी दर्शन न करा दूँ तो कहना ।।
तू मेरी हर मूरत में अपना मन स्थिर करके तो देख,
मैं तेरे मन को स्थिर न कर दूं तो कहना ।।
तू मेरी नियमित उपासना करके तो देख,
मैं तुझे नियम की शक्ति प्राप्त न करा दूँ तो कहना ।।
तू मेरा रक्षारूपी महारूद्र करके तो देख,
मैं हर महारूद्र में तेरा रक्षक न बनूँ तो कहना ।।
तू मेरी किसी भी मूर्ति में देवी देवताओं का दर्शन करके तो देख,
मैं तुझे सबका मालिका एक का दर्शन न करा दूँ तो कहना ।।
तू मेरे शक्तिरूपी सांई मंत्र की उपासना करके तो देख,
मैं तुझे मंत्र का अर्थ ना समझाऊँ तो कहना ।।
तू मेरी ज्ञानरूपी गंगा में नहाकर तो देख,
मैं तुझे महा ज्ञानी ना बनाऊं तो कहना ।।
तू मुझे छत्र अर्पण करके तो देख,
मैं तुझे मेरी छत्र छाया में ना रखूँ तो कहना ।।
तू मुझे अपना गुरूदेव समझकर तो देख,
मैं तुझे गुरूज्ञान अर्पण न करुं तो कहना ।।
तू मुझे मेरे नाम ले बुलाकर तो देख,
मैं सदा तेरे घर में वास न करूं तो कहना ।।
तू मेरा योगीरूपी दर्शन करके तो देख,
मैं तुझे योग शब्द का मनन न करा दूँ तो कहना ।।
तू मेरी विभूति को सांई औषधि समझकर तो देख,
मैं मेरी विभूति से सर्व रोग न मिटा दूँ तो कहना ।।
तू मेरे अखंड दीपक का दर्शन करके तो देख,
मैं हर दीपक में मेरा दर्शन न करा दूँ तो कहना ।।

भाग - १०

तू मेरे हाथों पानी से जले दीयों का मनन करके तो देख,
मैं तुझे हर दीये में ईश्वर का दर्शन न करा दूँ तो कहना ।।
तू मेरे हर धर्म के मनुष्य से हिलमिलकर रहकर तो देख,
मैं तुझे हर एक मनुष्य ता साथ न मिला दूँ तो कहना ।।
तू मेरा साईनाम सुमिरन कर के कोई भी कार्य करके तो देख,
मैं तेरे हर कार्य को सफलता प्राप्त न करा दूँ तो कहना ।।
तू मेरे प्रसादरूपी भंडारे में अन्नदान करके तो देख,
मैं तेरे अन्न के एक-एक दाने का हिसाब न चुका दूँ तो कहना ।
तू मेरी समाधि पर अपने हाथ का स्पर्श करके तो देख,
मैं तेरे हाथों की लकीरें ना बदल दूँ तो कहना ।।
तू मेरी समाधि के समक्ष दंडवत प्रणाम करके तो देख
मै तेरे प्रणाम को मेरी एक प्रेरणा ना समझूँ तो कहना ।।
तू मेरी समाधि के आगे सांईराम सांईराम की धुन गाकर तो देख,
मैं तुझे मंदिर की हर दीवार में सांईराम सांईराम न सुनाऊं तो कहना ।।
तू मेरे धाम में आकर भिक्षुओं को योग्य दान देकर तो देख,
मैं तेरे दिये हुए दान को एक सत्य काम ना समझूँ तो कहना ।।
तू मेरी आरती में तेरे हाथों से ताली बजाकर तो देख,
मैं तेरे हाथों की ताली में अलौकिक शक्ति ना भर दूँ तो कहना ।।
तू मेरे आगे नृत्य करके तो देख,
मैं तेरे नृत्य में वादक न बनूं तो कहना ।।
तू मेरी शरण में आकर तेरा मन समर्पण करके तो देख,
मैं तेरे मन को मजबूत ना बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरे रामनवमी के उत्सव को उत्साही बनाकर तो देख,
मैं हर उत्सव में तेरा साथ ना दूँ तो कहना ।।
तू मेरे मंदिर की प्रदक्षिणा करके तो देख,
मैं तुझे तेरे पितृ देवों की प्रदक्षिणा ना करा दूँ तो कहना ।।

भाग - ११

तू मेरे मुख से निकली वाणीरूपी शब्दों का मनन करके तो देख,
मैं हर शब्द में शांति प्राप्त न करा दूं तो कहना ।।
तू मेरी तन मन धन से भक्ति करके तो देख,
मैं तुझे धनवान न बना दूं तो कहना ।।
तू मेरी ज्ञानरूपी गंगा में डुबकी लगाकर तो देख,
मैं तेरा तारणहार न बनूँ तो कहना ।।
तू मेरे धाम में आकर गुरू मंत्रों का उच्चारण करके तो देख,
मैं हर मंत्र में तुझे गुरूदर्शन न करा दूँ तो कहना ।।
तू मेरी शिरडी में आकर पवित्रता से जागरण करके तो देख,
मैं तुझे मेरे जागरण की महिमा न समझाऊं तो कहना ।।
तू मेरे सामने अपने दुखों की व्यथा गाकर तो देख,
मैं तेरे हर दु:ख को सुख में ना बदल दूँ तो कहना ।।
तू मुझे गुलाब का हार अर्पण करके तो देख,
मैं तेरा जीवन सुगंधित ना बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरे धाम में दीपमालाओं की रोशनी करके तो देख,
मैं तेरे जीवन को रोशनी न कर दूँ तो कहना ।।
तू मेरी, शाम की आरती का आनंद लेकर तो देख,
मैं तुझे अति आनंदित न बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरे हर कार्य में श्री गणेशाय नम: उच्चारण करके तो देख,
मैं तेरे घर में शुभ कार्यों का आरंभ न करा दूँ तो कहना ।।
तू मुझे अर्पित प्रसाद हर भक्त को देकर तो देख,
मैं तुझे पुण्यशाली आत्मा न बना दूँ तो कहना ।।
तू मेरे पवित्र अँगूठे की पूजा करके तो देख,
मैं तुझे गुरू पूर्णिमा के पावन पर्व की याद ना दिला दूँ तो कहना ।।
तू मेरे सामने ॐ शब्द का जाप करके तो देख,
मैं तुझे दुनिया का हर सुख प्रदान ना कर दूँ तो कहना ।।

Sai Ram to Everyone,

My name is Ramsaiprakash. I am a humble salve of Saibaba. This is first time i visited Shirdi and i was very much afraid before going because i was alone when i started my journey. WHO ARE IN HURRY CAN KINDLY GO DOWN AND READ ONLY MIRACLE PART.

I Don't know how to describe. I don't vave words to say about my experience.

When I started my Journey by the Grace of Baba, I met one guy in my compartment in train. He is also coming to Shirdi. My seat no. was 34 and his is 38. He only asked me that are you coming to Shirdi. Then I said Yes. This is my first visit. Can you help me. Then he told me that nothing was to worry, I am visiting Shirdi from last 10 years and this is my 17th visit. Then I become very happy. Because he told me that he know each and every place in Shirdi in and around. Within half an hour he become a close friend (Like My family member). He asked me when you are coming back. I told I didn't plan because I didn't get return ticket Reservation. He asked me that "I am coming back on 20th will you come with me". Then I said Yes. He called to his friend who is Bangalore and asked him to reserve two tickets in tatkal and told him to mail the tickets to his email ID. (Next morning 17th only his friend confirmed the return ticket and mailed it).

Then I was thinking of accommodation. He told me that he had come with his two cousins and they had already reserved the room in lodge. But he told that he had a friend in Shirdi and he will arrange a room for you don't worry. Then I felt relaxed. But after some time one lady came with her son to our compartment. She was also coming to Shirdi. After talking for one hour she asked me where you are staying in Shirdi. Then I told I have not planned but my friend will arrange a room for me. Then she told me that she already booked a room for 1 day where lunch and dinner is free. She told me that she will be there in lodge for only two hours then she is going to Nasik with his son, if you want you can continue in that room only and I'll pay for one day.

See the Baba's Leela. Baba Arranged me return Ticket, A Room and a 16 times visited Experienced Friend What else I want from Baba.

Then next day we reached Kopergaon at 2 pm . We all me, my friend his 2 cousins, lady and his son total six members took an autorickshaw. First we visited THAPOBHOOMI where Baba did Tapasya for 16 years. Then we

went to GODAVARI RIVER washed our faces and put some water on head. Then we went to Lodge. We took our bath and then at 5pm we went to KHANDOBA TEMPLE . 6-30 went to DARSHAN. By 8-30 we took DARSHAN at Samadhi Mandir then we reached Chavdi. Because that was Thursday night at 9-15pm we saw PALAKI UTSAVA (CHAVADI PROCESSION).

We went to room by 10 pm had dinner and then came back to DWARAKAMAI. We were in DWARAKAMAI till night 1.30 pm reading "SAI SATCHARITA" and writing "Om Sai Ram". Then we came back to room and slept.

Morning after breakfast we visit SHYMA's House, Malhasapati's home and then Laxmibai Shinde's Home.

By 12 pm we went to see PANCHAMUKHI GANESH (Vishnu Ganesh) Temple. That is about 2 km from Shirdi. We visited temple and had PRASAD (Lunch) there Only. Everyday after 12.30pm they will give FREE food (lunch) to everybody who visits temple. Prasad (ANDHRA STYLE LUNCH) was were delicious. Then we came back visit temple.

Sai Baba's Miracle

By evening my friend took me to visit SAI DHAM (I think Most people don't know the place) which about 22 Kms from Shirdi and 6 km from Kopergaon. One Sai Devotee Baba is there called DHONDI RAM BABA or CHAVAN BABA. By Saibaba's prerana (inspiration) he tells solutions and suggestions. (LIKE JYOTISHA or FUTURE TELLER or Saibaba will comes in his body and tells).

In that SAI DHAM campus one small home is there called SAI DHAMA. One Sai temple is there. One more room is there but that it is underground.

Some miracles are already there.

1. In Sai Dham in front of Baba's Statue on marble tiles on ground OM AND THRISHUL are appeared.

2. Behind Sai temple one coconut tree is there in that tree you can see Sai Baba's face appeared. (In television and News papers covered that news with photo) (photo is in Saidham Room)

3. In underground room in front of Baba on wall marble tiles Saibaba's Face is appeared.

4. There dog does Aarti.

We three people went there by 7-15 pm. Dhondi Baba's home is in front of SAI DHAM. After visiting SAIDHAM BUILDING we went to see Baba but when we saw DHONDI BABA he started shouting angrily "GET OUT...GET OUT...I DON'T TELL ANYTHING...GO FROM HERE..."

Then we came back to temple. After taking Darshan we came outside. We saw Dhondi Baba coming from his house going towards SAIDHAM. Then again we went there. However he saw us again started shouting "Why don't you understand. Go away. I am not going to tell anything." Then I asked Dhondi Baba that we are not expecting anything from you and don't tell anything but let us take blessing and give permission to touch your feet. Then he agreed and stood in front of us. Then however I touched his feet he suddenly became cool and he blessed me and then he put his hand on my shoulder and told me to come inside. Then he took me in front of SAIBABA's Photo and shouts Baba is asking you dakshina give dakshina to him. Baba is asking you dakshina give dakshina to him he repeated. Suddenly I got shocked and I went near Sai Baba's photo and open my purse I saw there are two notes - one is FIVE HUNDRED and another one is ONE HUNDRED rupees. First I thought that to give 500 Rs. Then I changed my mind and then I put 100 Rs. infront of Baba's photo and came back. Then Dhondi Baba asked me first you wants to keep 500 Rs., then you kept 100 Rs. Isn't it?. I said "Yes". Then he told " Yesterday only you gave 500 Rs. in Shirdi isn't it? I said "Yes" (Because yesterday i.e. Thursday I gave 501 Rs. Donation in Shirdi).

Then with smile he asked "What you want from Baba". I said I don't want anything. Then he told your marriage will be fixed very soon go. (Tumhara Shaadi Jaldi Ho jayega, jao). Then he asked me that have any body suggested you to wear gem stone. I said yes. Then he asked who said you to wear gem stone. Then I told him that some astrologers told from last 2-3 years but I didn't wear it. Then he showed me he open his palm and showed me nothing was there then he told me take this Gem Baba told you to wear it. I open my palm and He give me one stone. (It was a Great Miracle From his bare hand he gave me one Stone which is sparkling). Then he told Sai baba gave that stone not me. Then he told to my friends that "Ye Sai Baba ka bacha hai, ye uska sacha Bhakt hai, iske hath me Saibaba ka hath hai - He is Sai Baba's child, he is His true devotee, he has Sai Baba's hand in his hand" Then again he told me, "Wo stone Saibaba ne

diya hai maine nahi" - This stone is given by Sai Baba and not me". I don't know how to express how I felt at that time. After coming outside he gave prasad pockets to me and my friends from his home. My friends asked to tell something about them. He told them that you come before evening Art now i am not telling anything.

Then I came back when we reached Shirdi, it was 9 pm we had dinner in a hotel. Then again we come to DWARAKAMAI and we sit there till morning 4 am. We saw by 3-15am they open DHUNI and first they will take some (FIRE) (CHARCOAL) agni for Dhoopa to wake up SAIBABA in Samadhi Mandir. Then they take out UDI from Dhuni. And there shops will be open at 2 am. I took one coconut. DWARAKAMAI opens at 4 am. I kept coconut in front of Baba (there will be one basket, we have to make any wish and put the coconut in that plastic box) AGAIN we sat in DWARAKAMAI till morning arti. Then we went to lodge and slept for few hours.

Morning we went to Shani Shinganapur at 8 am and came back by 1 pm. Then I visited Lendi Bagh, Gurusthan, Nandadeep, Museum, Temples of Shivji, ShaniDev and Ganeshji, Datt Mandir. Again I took one more time Darshan. Then I purchased some books, key chains, photos, small statues, calendars. I gave donation and collected some UDI pockets.

Saturday night again I came to Dwarakamai and till 2-30am I was present there. I spend my time reading Sai Satcharita and writing Om Sai Ram. Then there was one Swamy called Radhamohan who always did service of Sai Baba. He gave me one copy of "SAI PRERANA" and told me to read it on every Thursday and read everyday if possible. Then he suggest me to write "Om Sai Ram\" is red ink. He gave me one Shiva Sai photo also. He told that by reading SAI PRERANA our all wishes comes true within short period.

One girl was sitting with Swamji. He showed me that girl and told that she was from Punjab, her name is VINU. She and her husband both are software engineers in IBM. From last so many years they are trying to go to abroad. But that is not possible. Some 2-3 months back when she visited Shirdi this Swamy gave her SAI PRERANA and told her to read it and to write "Om Sai Ram" as much as possible. Within one month her wish came true and now she is going New Zeland with her husband.

If any one wants SAI PRERANA he/she can mail me. I'll try to scan it mail that to you.

I know that there are so many grammar and spelling mistakes my mail.

Please forgive the mistakes.

If anybody from Bangalore wants UDI can collect it from me. For more details or any kind of SAI SEVA I am here to do. Kindly give me the opportunity to serve the SAI DEVOTEES.

I AM A HUMBLE SLAVE OF SAI. ANY BODY CAN CALL ME ANY TIME FOR SAI SEVA OR SAI SEVAKS SEVA.

I AM ALWAYS HERE FOR 24/7 X 365.

OM SAI JAI SAI JAI JAI SAI

I REQUEST ALL DEVOTEES WHO READ MY EXPERIENCE KINDLY GIVE REPLY.. WAITING FOR YOUR REPLY.

In my next letter i'll post the some photos i have taken in "SAI DHAM" AND DHONDI BABA (CHAVAN BABAS) PHOTO WITH ME.

Ramsaiprakash
Bangalore

Update : After reading this experience many mails dropped in for Sai Prerna book, so it has been uploaded here for free download.